भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन (Indian National Movement) (1)

B.A Honour's, Part III, VIII Paper
Subject - Political - science

19 वीं शदी के उत्तरार्द्ध का काल भारत में राष्ट्रीयता के जन्म का काल कहा जाता है। वस्तुतः 18 वीं और 19 वीं शदी के समाज सुधारक भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रवर्तक थे, जिन्होंने शिक्षित नागरिक वर्ग (समाज) में जागृति लाकर राजनीतिक-चेतना को जन्म दिया और स्वाधीनता लाने के लिए संगठित हुआ। जिसके कारण अनेक संगठन स्थापित हुए जैसे बाम्बे ऐसोसिएशन (1852) ईस्ट इंडिया एसोसिएशन (1861), इण्डियन एसोसिएशन (1876) प्रमुख है। उपरोक्त संगठनों ने देश के विभिन्न भागों (शहरों एवं गाँवों) में लोगों में राजनीतिक-चेतना जगाने का बहुमूल्य काम किया। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का विफल होना "राजनीतिक संगठन का न होना ही" प्रमुख कारण था। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की हार ने पूरे भारतीय समुदाय को झकझोर कर रख दिया और इस प्रकार एक नवीन-चेतना की जागृति हुई जिसकी अभिव्यक्ति 'Indian National Congress' के रूप में हुई। जिसका एक मात्र लक्ष्य विदेशी शासन को भारत से उखाड़ फेंकना था। डॉ० पट्टाभि सीतारमैया ने भी इस पर अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि "कांग्रेस का इतिहास ही भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष का इतिहास है।"

राष्ट्रीय आन्दोलन का अर्थ (Meaning of National Movement):-

राष्ट्रीय आन्दोलन का शाब्दिक अर्थ है - राष्ट्र का या राष्ट्र के लिए आन्दोलन। यह देश के नागरिकों द्वारा संचालित राष्ट्र हित के पक्ष में आन्दोलन है। राष्ट्रीय आन्दोलन के मुख्य दो उद्देश्य हो सकते हैं :- (क) देश की आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक प्रगति (ख) देश की राजनीतिक एकता तथा स्वतंत्रता की प्राप्ति।

आधुनिक प्रचलित अर्थ में राष्ट्रीय आन्दोलन का एक मात्र अर्थ विदेशी सत्ता से मुक्ति के लिए संघर्ष है। 19वीं शदी में साम्राज्यवाद का बोलबाला रहा है। ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, हॉलैण्ड, बेल्जियम तथा कुछ अन्य यूरोपीय देशों ने एशिया, अफ्रीका तथा अमेरिका के अधिकांश आर्थिक रूप से पिछड़े देशों को अपने अधीन करके गुलाम बना दिया और उनका शोषण किया। उपनिवेशों की जनता में धीरे-धीरे राजनीतिक जागरण आया और उन्होंने गुलामी की जंजीरों से छुटकारा पाने के लिए उदार और उग्र रूप में [illegible]। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास भी गुलामी से मुक्ति ही था, [illegible] में राष्ट्रीय आन्दोलन का स्थान अविस्मरणीय है।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

राष्ट्रीय आन्दोलन के जन्म के कारण (Reasons for the rise of Indian National Movement) (1857 के स्वतंत्रता संघर्ष के कारण) :— भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास एक रोचक, अनुशासनपूर्ण, रोमांचक और प्रेरणादायक वृतान्त (कहानी) है। भारतीय राष्ट्रीय-चेतना के विकास में पाश्चात्य शिक्षा एवं संस्कृति और अंग्रेजों की आर्थिक शोषण, अविश्वास, दमन तथा भेदभाव की नीतियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत के लोगों में राष्ट्रीय-चेतना लाने के निम्नलिखित कारण विद्यमान है।

① राजनीतिक कारण (Political Causes) :— अंग्रेजों ने सर्वप्रथम पूरे देश में एक टिकाऊ केन्द्रीय शासन स्थापित किया, जिसके अन्तर्गत बाहरी आक्रमण और आन्तरिक अशान्ति से मुक्ति मिली। अंग्रेजों से पूर्व भारत अनेक छोटे-छोटे खण्डों एवं राज्यों में विभाजित था। उनके शासन में पहली बार एक ही कानून तथा न्याय व्यवस्था की स्थापना हुई। इसी राजनीतिक एकता की बुनियाद पर भारत की राष्ट्रीय एकता निर्मित हुई। जवाहर लाल नेहरू के अनुसार, " ब्रिटिश शासन द्वारा स्थापित भारत की राजनीतिक एकता सामान्य अधीनता की एकता थी, लेकिन उसने सामान्य राष्ट्रीयता की एकता को जन्म दिया।

② धार्मिक एवं सामाजिक कारण :— (Religious and social Causes) — अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के धार्मिक और सामाजिक व्यवहारों और रीति रिवाजों में जिस प्रकार से हस्तक्षेप किया जा रहा था, वह साधारण भारतीयों के असंतोष का एक बड़ा कारण बन गया। उन्होंने सती प्रथा को बन्द कर दिया और विधवा विवाह की आज्ञा दे दी। तत्कालीन रूढ़िवादी लोगों ने इसे धर्म में हस्तक्षेप समझा। हिन्दू उत्तराधिकार कानून में परिवर्तन करते हुए इस बात की व्यवस्था की गई कि ईसाई धर्म ग्रहण करने के बाद भी उस व्यक्ति का अपनी पैतृक सम्पत्ति में भाग बना रहेगा। अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा का भी नाश किया। अंग्रेजों की नीति यहाँ की अधिकांश जनता को अशिक्षित रखने की थी क्योंकि अधिक शिक्षित व्यक्तियों से विद्रोह की सम्भावना सदैव बनी रहती थी।

इसके अतिरिक्त अंग्रेज भारतीयों को बड़े पैमाने पर ईसाई बनाना चाहते थे, इसके लिए उन्होंने प्रयत्न भी किये। यह कार्य साधारण जनता और सेना में दोनों स्थानों पर किया गया। इसके पीछे कारण यह था कि अंग्रेज समझते थे कि यदि भारत का ईसाई बना लिया जायेगा तो उनका शासन भली प्रकार बहुत दिनों तक भारत में निर्विरोध चल सकता है क्योंकि दोनों का धर्म एक ही हो जायेगा। ईस्ट इंडिया कम्पनी के अध्यक्ष मैंगल्स ने सन 1857 में पार्लियामेन्ट में कहा था कि " परमात्मा ने हिन्दुस्तान का विशाल साम्राज्य इंग्लिस्तान को इसलिए सौंपा है ताकि हिन्दुस्तान में एक सिरे से दूसरे सिरे तक ईसा मसीह का विजयी झण्डा फहराने लगे। हममें से हर एक ने अपनी पूरी शक्ति इस काम में लगा देनी चाहिए ताकि सारे भारत को ईसाई बना लेने के महान कार्य में देश भर के अन्दर कहीं पर किसी

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

कारण जरा भी ढील न आने पाये / 'सत्यार्थ प्रकाश' में स्वामी दयानन्द ने स्पष्ट लिखा है कि "स्वदेशी राज्य चाहे वह कितनी ही त्रुटियों से पूर्ण हो, अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से कहीं अधिक अच्छा है, रामकृष्ण परमहंस का स्पष्ट मत था कि भारत की समस्याओं का निवारण भारतीय धर्म और संस्कृति द्वारा ही हो सकता है। थियोसोफिकल सोसायटी ने अनेक सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों द्वारा भारतीयों में राष्ट्रवाद की ज्योति जाग्रत की और भारतीय जनता में आत्म विश्वास पैदा किया।

(3) **आर्थिक कारण (Economic Causes)**:— 19 वीं शताब्दी में इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति हो चुकी थी, इसलिए इंग्लैण्ड को भारतीय कच्चे माल की और अपने कारखानों में निर्मित पक्के माल को बेचने के लिए भारतीय मंडियों की आवश्यकता थी। इन दोनों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इंग्लैण्ड वालों ने भारतीय उद्योग-धन्धों को नष्ट कर दिये। भारत से कच्चा माल इंग्लैण्ड जाता रहा और बना हुआ माल भारत में आकर बिकता रहा, जिससे भारत के उद्योग-धंधे चौपट हो गये और धन इंग्लैण्ड जाने लगा जिससे यहाँ के लोग गरीब हो गये। चार करोड़ भारतीयों को केवल दिन में केवल एक बार खाना खाकर संतुष्ट रहना पड़ता था और इंग्लैण्ड भूखे किसानों से बल पूर्वक टैक्स वसूल करता था और यहाँ इंग्लैण्ड का माल भेजकर भारत से लाभ कमाता था। टैक्स वृद्धि होने के कारण किसान उसे अदा नहीं कर पाते थे जिससे उनकी सम्पत्ति, भूमि नीलाम कर दी जाती थी। शासन की दमनात्मक नीति और बार-बार पड़ने वाले अकालों से किसानों को बहुत कष्ट उठाने पड़ते थे। देश में दरिद्रता का साम्राज्य फैल गया। फिर ब्रिटिश शासन महँगा भी था। उच्च पदों पर भारतीयों को नियुक्त ही नहीं किया जाता था। इन सभी बातों ने राष्ट्रीय असंतोष को जन्म दिया। दादा भाई नौरोजी उदारवादी नेता ने अपनी पुस्तक Poverty and Un-British rule in India में लिखा है कि "अंग्रेजों के पूर्वगामी शासक कसाई थे जो इधर व उधर काटते थे, परन्तु अंग्रेज जिनके पास वैज्ञानिक चाकू है, हृदय तक को काट रहे हैं, फिर भी घाव दिखाई नहीं देता है, वे शीघ्र ही सभ्यता की उच्च बातों, उन्नति तथा न जाने किन-किन बातों का प्लास्टर लगा देते हैं।"

(4) **सैनिक कारण (Military Causes)**:— कम्पनी की सेना में भारतीयों की संख्या अंग्रेजों से अधिक थी लेकिन अंग्रेजों की तुलना में भारतीय सैनिकों को कम वेतन मिलता था और उनके साथ अंग्रेज अधिकारियों का व्यवहार बुरा था, इसलिए उनके मन में विद्रोह की भावना वैल्लूर के गदर से ही विद्यमान थी। जब अफगानिस्तान में अंग्रेजों की हार हो गई तो इससे बंगाल सेना पर बहुत बुरा असर पड़ा। बंगाल सेना में अधिकतर अवध के सैनिक थे। जब अवध को अंग्रेजी

शासन में मिला लिया गया और बड़े-बड़े जमींदारों की जागीरें जब्त कर ली तो अवध के सैनिकों के मन में बहुत रोष उत्पन्न हुआ। (4)

लॉर्ड केनिंग ने एक कानून पास कर दिया था जिसके अनुसार भारतीय सैनिकों को लड़ने के लिए समुद्र पार विदेशों में भेजा जा सकता था, जो हिन्दू धर्म के विरुद्ध समझा जाता था। इसी समय उन्हें ऐसे कारतूस दिये गये जिनमें गाय और सूअर की चर्बी लगी थी और जिन्हें चलाने से पहले मुँह से तोड़ना पड़ता था। इतिहासकार सर जान के ने भी इसे स्वीकार किया है। उन्होंने लिखा है कि दिसम्बर 1853 में कर्नल टकर ने बहुत साफ शब्दों में इस बात को लिखा था कि नए कारतूसों में गाय और सूअर की चर्बी लगाई जाती थी।"

इसी समय अंग्रेजों द्वारा भारतीयों को ईसाई धर्म में दीक्षा देने का कार्य किया जा रहा था, भारतीय सैनिकों ने समझा कि सेना में अपनायी गयी ये साजिशें भी उनको धर्म भ्रष्ट कर ईसाई बनाने के लिए ही की जा रही हैं। अतः उन्होंने धर्म भ्रष्ट होने के स्थान पर ऐसे पतित शासन का अन्त कर देना ही उचित समझा।

इस प्रकार चर्बी के कारतूसों ने बारूद के ढेर में चिन्गारी का काम किया। अचानक इस विस्फोटक मसाले में आ पड़ी। वह एक युद्ध, एक राष्ट्रीय और धार्मिक युद्ध था। मेंडले ने कहा है कि "किन्तु वास्तव में जमीन के नीचे ही नीचे जो विस्फोटक मसाला अन्य कारणों से बहुत दिन से तैयार हो रहा था, उस पर चर्बी लगे कारतूसों ने केवल दियासलाई का काम किया।"

स्वतंत्रता संग्राम (1857) की असफलता के कारण :- (Causes of the failure of the Armed Struggle for freedom) :- 1857 का विद्रोह यद्यपि भयंकर विनाशकारी था, लेकिन विद्रोहियों के संगठन की दुर्बलता एवं बेकार हथियारों के कारण असफल रहा और शीघ्र ही कुचल दिया गया, जिसके निम्नलिखित कारण थे।

(i) **त्रुटिपूर्ण हथियार (Defective equipment) :-** क्रान्तिकारियों के पास आधुनिक अस्त्र-शस्त्र नहीं थे। भारतीय सिपाही तलवारों से लड़ रहे थे जबकि अंग्रेजी सेना तोपों से लड़ रही थी। बन्दूकें भी थी तो बारूद वाली जबकि अंग्रेजों के पास कारतूस वाली। ये बन्दूकें अधिक मारक और कार्यकुशल भी थे।

(ii) **वैज्ञानिक आविष्कार (Scientific Invention) :-** 1857 ईस्वी तक भारतवर्ष के महत्वपूर्ण स्थानों को तार Telegraph और संचार व्यवस्था से जोड़ दिया था जबकि भारतीय एवं भारतीय सैनिक इस लाभ से वंचित था जिसका भरपूर फायदा अंग्रेजों को ही जाता था। भारतीय एवं भारतीय सिपाहियों के अंदरूनी बात तुरन्त अंग्रेजों को प्राप्त हो जाता था लेकिन जब अंग्रेजी [illegible] सिपाही पर हमला करता उसकी बात की जानकारी नहीं मिलती

(III) अनेक सामन्तों की स्वामीभक्ति (Loyalty of many feudatories) :- अंग्रेजों को कई महत्वपूर्ण सामन्तों की स्वामिभक्ति प्राप्त हुई। इन सामन्तों ने अंग्रेजों को न केवल आर्थिक और सैनिक सहायता ही दी बल्कि विद्रोहियों के साथ विश्वासघात करके उनके मनोबल को गिराकर अंग्रेजों की विजय में सहायता की। कश्मीर, नेपाल, जींद, पटियाला, नाभा, जयपुर, हैदराबाद और ग्वालियर के महाराजाओं ने हर संभव तरीके से अंग्रेजों की सहायता की।

(IV) साधारण जनता के समर्थन का अभाव (lack of universal support) :- इस क्रांति को केवल कुछ देशी रियासतों के स्वामियों तथा सिपाहियों तक ही सीमित रखा गया। अगर इस संघर्ष में जनता को साथ लिया गया होता तो अंग्रेजों की पराजय अवश्य होती।

(V) विद्रोह का योजनाबद्ध न होना (Absence of a planned Action) :- विद्रोह की कोई देख-रेख करनेवाला केन्द्रीय सत्ता नहीं थी जो उसे सुचारु रूप से संचालित करें। परिणामस्वरूप विद्रोही अनुशासित नहीं रह सके और इसका मूल्य बहादुर शाह ज़फर के रूप में चुकाना पड़ा।

(VI) योग्य नेतृत्व का अभाव (lack of able leadership) :- विद्रोहियों के पास योग्य नेतृत्व का अभाव था। जो सम्पूर्ण भारतवर्ष को अंग्रेजी शासन से मुक्त करने के विचार पर विश्वास रखता हो। प्रायः सभी विद्रोही नेता रियासतों के प्रति अंग्रेजों के व्यवहार से असंतुष्ट थे। लेकिन विद्रोहियों में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था जो एकता, विश्वास और सिद्धान्तों का प्रतीक मान सके।

(VII) अंग्रेजों की कूटनीति (British Diplomacy) :- अंग्रेजों ने इस क्रांति को दबाने में कूटनीति का प्रयोग किया। मिर्जा इलाही बख्श को लालच देकर मिला लिया जिससे पठानों एवं सिखों का समर्थन मिल गया। लेकिन सिख वाले अंग्रेजों के शुरु से ही घोर शत्रु थे।

(VIII) क्रांति का समय से पूर्व शुरु होना (Premature Revolt) :- क्रांति का शुरुआत 31 मई को होना था लेकिन 10 मई 1857 को ही हो गया जिसके कारण बहुत लोगों में जानकारी का अभाव था। जहाँ क्रांति हुई वहाँ तो ठीक है लेकिन जहाँ जानकारी के अभाव में क्रांति नहीं हुई वहाँ अंग्रेजों ने भारतीय सैनिकों से हथियार रखवा लिये थे। जहाँ जहाँ यह क्रांति भड़की उसको अंग्रेजों ने कुचल दिया। जे. सी. विल्सन के शब्दों में "वास्तव में मेरठ की सेनाओं ने वहाँ के सिपाहियों को समय से पहले भड़काकर अंग्रेजी राज्य को नष्ट होने से बचा लिया।"

डॉ० राजू मोची
विभागाध्यक्ष - राजनीति विज्ञान
डी-के- कालेज, डुमराँव
दिनांक 26/07/2020

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA